ऋणनिर्देश

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले तथा मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देनेवाले गुरूजनों, हितचिंतकों एवं आत्मीयजनों के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय आदरणीय गुरूवर्य शोध-निर्देशक डॉ. साताप्पा सावंत जी के कुशल निर्देशन का फल हैं। आपने अनेक व्यस्तताओं के बावजूद भी प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को मार्गदर्शक के रूप में आत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है। आपके प्रति शब्दों में आभार व्यक्त करना असंभव है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेह तथा मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य के महाकवि रामदास निमेश जी का मैं सदैव आभारी रहूँगा। आपने अनेक व्यस्तताओं के बावजूद भी आपका बहुमूल्य समय निकालकर जो सहयोग दिया, इससे मुझे मेरे शोध कार्य में मौलिकता लाने में सहायता हुई है। अत: मैं आपका और आपके परिवारजनों का सदैव ऋणी रहूँगा। साथ ही हिंदी के महान दलित साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय जी, रूपचंद गौतम जी, महाकवि के मित्र प्रो. हरिशचंद्र बौद्ध जी, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रो. डॉ. पद्मा पाटील जी, आदरणीय प्रो. डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, विलिंग्डन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. निर्मळे जी, उपप्राचार्य डॉ. गायकवाड जी, जयसिंगपुर कॉलेज के हिंदी विभाग अध्यक्ष डॉ. सुनील बनसोडे जी, प्रा. संसुद्धी मॅडम जी, हातकणंगले कॉलेज के डॉ. मोहन सावंत जी, प्रा. विकास विधाते जी, डॉ. उत्तम कांबळे जी आदि का सहयोग मिला उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की परिपूर्ति के लिए मेरे आदरणीय पिताजी श्री. व्हन्नाप्पा कांबळे और माताजी सौ. विमल कांबळे के शुभ आशीष के कारण ही मैं अपने कार्य में सफल हुआ हूँ। मेरे नानाजी, नानीजी, मामाजी, मेरा छोटा भाई बाबासो, बहन प्रतिभा, सारिका बहनोई अमोल शशबरे, प्रा. महेश गाडे आदि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना

कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत लघु-शोध कार्य को संपन्न करने में मेरे अनगिनत मित्र और हितचिंतकों ने समय पर सहयोग दिया है। अत: इन सब का मैं विशेष आभारी हूँ। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को संपन्न करने के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर तथा विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली से हुई। अत: इस ग्रंथालयों के ग्रंथपाल तथा अन्य कर्मचारियों का मैं ऋणी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक रूप में टंकण करनेवाले मेरे मित्र अविनाश तथा अरूण कांबळे का मैं आभारी हूँ। अंत में इस शोध कार्य को संपन्न करने के लिए प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में जिन्होंने सहायता की है, मैं उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। और इस लघु शोध-प्रबंध को विद्वानों के सम्मुख विनम्रतापूर्वक परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 27 DEC 2010

शोध छात्र

(श्री. भिकाजी व्हन्नाप्पा कांबळे)